ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

पं॰ विद्याधर व्यास द्वारा रचित कुछ बंदिशों का विश्लेषण एवं स्वरलिपिकरण

गतिकृष्ण नायक
शोधार्थी, संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

प्रस्तावना

"वामांतुरूच्यते गेय धातुरित्यभिधीयते।
वाचं गेयं च कुरूते यः स वाग्गेयकारकः।।"[1]

'संगीत रत्नाकर' के अनुसार वाणी अथवा काव्य को 'मातु' कहा जाता है और गेय अर्थात् स्वर–ताल आदि की योजना को 'धातु' कहा जाता है। वाग्गेयकार का शाब्दिक अर्थ–वाक् अर्थात् पद रचना और गेय अर्थात् स्वर रचना, दोनों का ज्ञान रखने वालों को वाग्गेयकार कहते हैं।

वर्तमान समय में ऐसे ही एक प्रातः स्मरणीय, यशस्वी व्यक्तित्व से स्वामी और उच्चकोटि के संगीतकार को संगीत जगत् "पं॰ विद्याधर व्यास" जी के नाम से जानता है। पं॰ विद्याधर व्यास एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी संगीतज्ञ हैं।

घर में सांगीतिक विरासत होने के कारण पं॰ जी की रूचि संगीत में होना स्वाभाविक है। आपने सांगीतिक शिक्षा विधिवत् रूप से अपने पिता तथा गुरू 'पं॰ नारायण राव व्यास' जी से ग्रहण की है जो स्वयं एक ख्याति लब्ध गायक थे व गायनाचार्य 'पं॰ विष्णु दिगम्बर पलुस्कर' जी के सुयोग्य शिष्यों में से थे। पं॰ विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने संगीत जगत् को बहुत गुणी कलाकार दिये हैं। पं॰ विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के अनेक सुयोग्य शिष्य हुए जिन्होंने बंदिश निर्माण क्षेत्र में अप्रतिम कार्य किया। पं॰ जी स्वयं एक उच्च कोटि के रचनाकार थे, उनके शिष्यों में पं॰ ओंकारनाथ ठाकुर और पं॰ शंकरराव व्यास दो बहुत प्रशस्त रचनाकार हुए हैं। आगे चलकर इनके प्रशिष्यों में भी उच्च स्तर के कई रचनाकार हुए हैं।

पं॰ विद्याधर व्यास जी वर्तमान समय में ग्वालियर घराने के अग्रज कलाकारों में से हैं। पं॰ जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। वे एक कुशल संगीतज्ञ गायक, वादक, अभिनेता एवं वाग्गेयकार भी हैं। उन्होंने समय–समय पर अनेक बंदिशों की रचना की है। कई रचनाएँ ऐसी भी हैं जिनमें स्वर रचना व शब्द रचना दोनों ही पंडित जी की हैं।

व्यास जी की बंदिशों के विषयों पर नज़र डाली जाये तो स्पष्ट हो सकेगा कि उन्होंने भक्ति रस नायक–नायिका, श्रृंगार परक, ऋतु वर्णन आदि पारम्परिक विषयों के साहित्य को ही अपनी बंदिशों के लिए चुना है।

मेरा सौभाग्य है कि इस लेख के लिए जब मैंने उनकी रचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उनका साक्षात्कार लिया, तो महसूस हुआ कि उनकी संगीत और काव्य के आपसी संबंध के बारे में धारणा अत्यन्त विलक्षण है। उनकी स्पष्ट राय है कि बंदिश, राग संगीत की पैनी दृष्टि रखने वाले संगीतकार के द्वारा ही रची होनी चाहिये।

यहाँ प्रस्तुत हैं इस साक्षात्कार के कुछ अंश–

[1]. शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर, भाग–2, पृ.सं.–108

प्र॰ गुरूजी जिस तरह से भाब्दों का यानि साहित्य का महत्व ध्रुपद में है उतना ही महत्व ख्याल में भी है क्या?

उ॰ बंदिशों में हम जिस भाषा का प्रयोग करते हैं तो स्वाभाविक रूप से उसका महत्व तो रहता ही है, बाकि ये कलाकार के ऊपर निर्भर करता है कि वह किस तरह उसके महत्व को जानकर कम या ज्यादा उपयोग करते हैं। हमारा जो शास्त्रीय संगीत है उसका सही नाम रागदारी संगीत है। अब जब शास्त्रीय संगीत कहते हैं तो शास्त्र माने थ्योरी या टेकनीक। असली नाम है–रागदारी, मतलब रागों की प्रधानता। जब हम ख्याल गाते हैं तो शब्द थोडे बहुत इधर–उधर हो जाते हैं तो हम उसे दोबारा कह सकते हैं पर स्वरों का इधर–उधर नहीं किया जाना चाहिये। उस राग में दूसरे राग नहीं दिखना चाहिये। राग को सम्भालने के लिये कई बार शब्दों की अनदेखी की जाती है। कुछ घरानों में कलाकारों को तो उस शब्द का सही अर्थ तक नहीं पता होता। विशेषतः महाराष्ट्र में कई बार ऐसा होता है क्योंकि वहाँ लोगों को बृजभाषा इत्यादि का अधिक ज्ञान नहीं है।

प्र॰ बंदिश को आप कैसे देखते हैं?

उ॰ संगीत के मुख्य दो स्तम्भ हैं–'स्वर और 'लय'। जब स्वर और लय साथ में आते हैं और किसी कलाकृति में बंध जाते हैं, तो उसे बंदिश कहते है। राग भी एक बंदिश है। और इसी बंदिश को संगीत कहते हैं जिसे हम गाते–बजाते हैं। बंदिश के प्रकारों से संगीत के प्रकार बनते हैं। जैसे–प्रबंध में अलग–अलग प्रकार हैं। ध्रुपद एक प्रकार हो गया और ख्याल एक प्रकार हो गया। इस तरह के प्रकार संगीत की विविध विधाओं के प्रकार कहलाते हैं। ख्याल के अंगभूत प्रकारों में तराना, चतुरंग, त्रिवट, टप्पा, तराना के अलावा अष्टपदी भी एक प्रकार है जिसके 8 पद होते हैं, पर वो कम लोकप्रिय है, यह क्षेत्रीय संगीत तक ही सीमित रहा। ये ज्यादातर उडिशा में गाया–बजाया जाता है।

प्र॰ बंदिश बनाने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

उ॰ मेरे बड़े काका पं॰ शंकर राव व्यास और पं॰ कुमार गंधर्व जी से ही मुझे नवीन बंदिशों के निर्माण की प्रेरणा मिली। मेरे काका ने अनेक रागों में बंदिश निर्माण किया। जिनका संकलन व्यास कृति के चार भागों में किया गया है। मेरे पिताजी पं॰ नारायण राव व्यास ने काका द्वारा रचित बंदिशों को गाकर जग प्रसिद्ध किया। काका को 'आधुनिक सदारंग' का खिताब दिया गया था।

प्र॰ राग के भाव के हिसाब से भी शब्दों का ख्याल रखना चाहिये?

उ॰ जब बंदिश कहते हैं, मतलब बंधी हुई, तो ये बंधन कौन–कौन सा है? सब से पहले राग के स्वरों का बंधन, ताल का बंधन और जब हम गाते हैं तो उसकी भाषा और शब्दों का बंधन होता है। बंदिश निर्माण के समय सबसे पहले रागों की प्रधानता का बंधन निभाया जाता है। राग, ताल, लय उसके बाद शब्द और उसकी भाषा इस तरह रहता है। यदि राग भाव के साथ उसकी लय व शब्द योजना इनका संबंध बिठाकर रचना की जाए, तो वह रचना अवश्य ही उत्तम होगी।

प्र॰ जैसे पं॰ शंकरराव व्यास जी की बहुत सी रचना राधा कृश्ण पर आधारित है तो आप भी कुछ वैसा सोचते हैं?

उ॰ नहीं ऐसा कुछ निश्चित नहीं है मेरे साथ, और मेरे बंदिश बनाने में इस तरह की नियमितता भी नहीं है। एक आज बना लिया एक 4 महीने बाद, जैसे जिस तरह सूझा जब सूझा बना लिया।

एक बार मेरा एक प्रवास था 1994–95 में अमेरिका का। तो मैं मॉरीशस गया था। वहाँ पर एक रियूनियन आईलैंड है, वहाँ दक्षिण भारत के काफी लोग रहते हैं। वहाँ फ्रेंच भाषा बोली जाती है, पर वहाँ कामकाजी और सामान्य भाषा में तमिल बोली जाती है। वहाँ दक्षिण भारतीय संस्कृति की प्रधानता है।

इस जगह पर मेरा कार्यक्रम और वर्कशॉप हुआ तो, वहाँ कर्नाटक संगीत चलता है, तो मैंने सोचा भूपाली में कुछ सिखाते हैं, भूपाली व मोहनम् उनके करीब–करीब स्वर है।

जब ख्याल गाया तो वो उत्तर भारतीय भाषा में था, तो मैंने सोचा की तराना गाते हैं ताकि वो आनन्द ले सके, तो मैंने तराना बनाया क्योंकि तराना में भाषा का अर्थ नहीं होता। तो इस तरह बड़ा आकर्षक

तराना बन गया। बनने के बाद ही मुझे लगा कि हाँ अच्छा बना है। ऐसा नहीं की हमेशा मुझे अपनी बनाई बंदिश अच्छी लगे, बंदिश बनने के बाद उसे देखता हूँ कि ये इतनी अच्छी नहीं बनी या कभी–कभी ऐसा लगता है कि अच्छी बन गई।

प्र. गुरूजी आपके द्वारा रचित कुछ बंदिशें सुना सकते है?

उ. हाँ जरूर!! एक बंदिश मैंने बनाई है राग मधमाद सारंग में। द्रुत एकताल की बंदिश है–

"सब गुनिजन गावो बजावो
गुन की चर्चा करो, आनंद बधाओ"

यह बंदिश मैंने जयपुर में बनाई थी। इस बंदिश की प्रेरणा मुझे कुमार गंधर्व जी की बंदिशों से मिली। सभी लोग परंपरागत बंदिश गाते आ रहे हैं तो मैंने सोचा कि कुछ अलग हो इसमें, तो ये बंदिश बन गई।

एक बार ये बंदिश कुमार गंधर्व जी को सुनाई तो वो बोले–वाह! अच्छी बनी है।

एक बंदिश मैंने बनाई थी गुणक्री में। गुनक्री में एक पारम्परिक रचना **'बाजे डमरू हर कर.....'** धमार के रूप में लोग इसे गाते है। ये बहुत पुरानी बंदिश है। यह शिव स्तुति है। इसे रूपक ताल में भी गाते हैं। तो उसका छोटा ख्याल नहीं मिल रहा था। तो मैंने सोचा कि, इतनी अच्छी शिव स्तुति है तो छोटा ख्याल गजानन (गणेश जी) पर बनाया जाए ताकि ये बड़े ख्याल से मिलती–जुलती हो। तो जब बनाने का सोचा तो बहुत अच्छी बंदिश बनी।

स्थाई – **वंदे श्री वर गणेश, वक्रतुण्ड एक दन्त**
लम्बोदर पीत वस्त्र भुभ कार्ये प्रथम नमो।

अंतरा – **मोदक प्रिय पार्वति सुत, गजमुख मूषक वाहन।**
विघ्नहार मंगल दायक, तुम ही भक्तन को।।

यह बंदिश द्रुत एकताल में है।

प्र. गुरूजी, अब तक आपने कितनी बंदिशों की रचना की है?

उ. आज तक मैंने कोई 30–40 बंदिशों की रचना की होगी। मैं कोई बंदिशकार नहीं हूँ, ना ही मैं स्वयं को वाग्गेयकार मानता हूँ।

जब किसी से प्रेरणा मिलती है, कुछ विचार मन में आते हैं, उस समय बंदिश बनाता हूँ, या कहूँ कि बंदिश बन जाती है। तो इस तरह समय–समय पर बंदिशें बनती है। जैसे एक बार सन् 1990 के आस–पास मुम्बई युनिवर्सिटी में बच्चों को राग गोरख कल्याण सिखा रहा था, उसमें बहुत ही प्रसिद्ध बड़े ख्याल की बंदिश है–'धन धन भाग गोरी तोरे', तो इसे सिखाने के बाद जो जोड़ छोटा ख्याल का मुझे मिला वो मुझे इतना आकर्षक नहीं लगा, तो मैंने सोचा क ये इतना अच्छा और मधुर राग है तो क्यूं ना हम ही इस का जोड़ा बनाते हैं, तो जब बनाने के दिशा में सोचने लगा तो एक–एक करके शब्द मिल गये, शब्दों के साथ स्वर भी आ गये।

तो ये भी स्वतः स्फूर्त बात होती है, सोचकर बैठना कि मुझे बंदिश बनाना है, ये भी एक तरीका है, पर मेरे लिये वो तरीका काम नहीं करता, तो जब कोई प्रेरणा मिलती है तो मेरे सामने शब्द आते हैं। कभी–कभी स्वर पहले आते हैं और बाद में वो स्वर शब्दों को ले आते हैं।

वो जो बंदिश है–गोरख कल्याण की 'पायलिया छुम छनन मोरी बाजे' वो बंदिश इस प्रकार बनी है।

प्र. बंदिश के अलावा कभी तिरवट, चतुरंग इत्यादि भी बनाया है? एक बार मैंने आपसे सीखने के दौरान तोड़ी राग में एक तिरवट सुना था उसमें कुछ प्रयोग किये थे?

उ. वह मूलरूप से पं. विष्णु दिगम्बर पुलस्कर की रचना है। मैंने इसके अंतरे में थोड़ा 'वैरिएशन' किया था। वैसे मैंने ऑन द स्पॉट तराने भी बनाये हैं। 15 साल पहले, मेरा रेडियो का संगीत सम्मेलन का कार्यक्रम था, उस समय मैं लखनऊ में था और प्रोग्राम जालंधर में था। उस दिन भारत के राष्ट्रपति गुजर गये, तो इस वजह से जिस सभागार में प्रोग्राम होना था वो कैंसिल हो कर स्टूडियो रिकार्डिंग हुई तो उस समय में स्वतः स्फूर्त एक तराना बन गया और उसी समय मैंने उसे गा दिया, उसकी काफी तारीफ भी हुई।

कई बार होता है कि बंदिश, तराने आदि बनाकर मैं भूल जाता हूँ व्यस्तता के कारण लिख नहीं पाता हूँ

इस तरह कई नवीन रचनाएँ विस्मृत भी हो गई।

प्र॰ गुरूजी आपके विचार में बंदिश को लिपिबद्ध करने का क्या महत्व है?

उ॰ संगीत वह ललित कला है, जिसमें स्वर–ताल के माध्यम से संगीतज्ञ अपने मनोगत भावों को व्यक्त करता है। मानव की इस इच्छा के फलस्वरूप कि वह अनुभव से प्राप्त ज्ञान को सुरक्षित रख सके, इसलिये संगीत क्षेत्र में भी विद्वानों ने संगीतोपयोगी ज्ञान अर्जित किया तथा उसको सुरक्षित रखने का संभव प्रयास किया। इतिहास साक्षी है कि विभिन्न काल खंडों में तत्कालीन व्यवस्थानुसार संगीत को सुरक्षित रखने के प्रचुर प्रयास होते रहे हैं।

किसी भी सांगीतिक रचना को लिखित रूप में संग्रहित करने के लिये स्वरलिपि एक महत्वपूर्ण माध्यम है। जिस प्रकार किसी भाषा को सीखने के लिए भाषा लिपि आवश्यक है उसी प्रकार संगीत को सीखने के लिए स्वरलिपि आवश्यक है। यद्यपि स्वरलिपि ध्येय तो नहीं तथापि ध्येय प्राप्ति का एक साधन अवश्य है।

सारांश– पं॰ विद्याधर व्यास जी द्वारा रचित बंदिशों का स्तर बहुत ही उत्कृष्ट है। मैंने गुरूजी (पं॰ विद्याधर व्यास) के द्वारा रचित बंदिशों की स्वरलिपि को इस लेख में लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है जो "पं॰ विष्णु नारायण भातखंडे" स्वरलिपि पद्धति के अनुसार है।

पं॰ विद्याधर व्यास जी द्वारा रचित रचनाएँ

राग – गोरख कल्याण (मध्यलय तीनताल)

स्थाई – पायलिया छुम छननन मोरी बाजे
कैसे जाऊँ पी को मिलन मधुरात
सखियाँ जगात देखत मोरी मात।।

अंतरा – मधुरात चाँदनी चमकत
जियरा उन बिन तरपत
कैसे घर जाऊँ मोरा शृंगार मुरझात।।